श्राद्ध तर्पण क्यों?
वैज्ञानिक रहस्य एवं आवश्यकता

अपने स्वर्गवास हुए पितरों का श्राद्ध, तर्पण करने का विधान दुनियां के लगभग सभी धर्मों में पाया जाता है। यह बात अलग है कि सभी धर्मों में इसके विधान और नियम अलग-अलग हैं। इस धार्मिक विधान के पीछे क्या रहस्य है? क्या वैज्ञानिकता है? यह क्यों किया जाता है? आईये जानने का प्रयास करें...!!

हमारा सनातन धर्म पूर्ण सहिष्णु तथा विश्वहितकर है। इतना उदार कोई भी अन्य धर्म विश्वभर में कहीं नहीं है। यह इसकी महान् विशेषता है। यहां तक कि वर्षभर में एक सम्पूर्ण पक्ष पूज्य पितरों आदि के प्रति शास्त्रीय कर्मादि द्वारा अपनी श्रद्धा-निष्ठादि को प्रकट करने के लिये नियत है। कितना सुन्दर एवं सामयिक विधान है। 'श्राद्ध' शब्द का श्रद्धा से पूर्ण सम्बन्ध है और इसी विशिष्टता को वह चरितार्थ करता है। प्रसिद्ध मुगल बादशाह शाहजहां ने भी धर्म के इस आचरण की महत्ता स्वीकार कर उसकी सराहना की थी। बंदी बनाये जाने के पश्चात् जब औरंगजेब ने उसके जमुना-जल पीने पर पाबंदी लगा दी तो उसने एक फारसी शेर लिखकर औरंगजेब की भर्त्सना इस प्रकार की कि 'हिन्दू लोग प्रशंसा के योग्य हैं जो दिवंगत पित्तरों को भी पानी पिलाते हैं और एक तू है जो अपने बूढ़े जिन्दा बाप को भी पानी के लिये इस प्रकार तरसाता है।' शाहजहां की इस वाणी में कितनी मार्मिकता थी, जो औरंगजेब के हृदय में तीर की तरह चुभी। बात ही कुछ ऐसी थी।

यह पक्ष एवं इसके कर्म-सभी वेदोक्त एवं शास्त्रोक्त हैं। दानवीर राजा कर्ण के साथ भी पुराण में इसका सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। श्रद्धा के साथ मन्त्र का उच्चारण करके इस लोक से मृतक हुए नित्य पितृ, नैमित्तिक पितृ, प्रेत आदि की योनि को प्राप्त पिता, पितामह आदि कुटुम्बियों की तृप्ति के लिये शास्त्रानुसार जो विधि या क्रिया की जाती है उसका नाम 'श्राद्धपक्ष' है। हिन्दू जाति इस लोक के साथ ही साथ परलोक पर भी दृष्टि रखती है, इसीलिये इसमें पिता, पितामह और प्रपितामह की सद्गति तथा तृप्ति के लिये श्राद्ध क्रिया नियत की हुई है। जीवित पित्तरों की तो सेवा हुआ ही करती है, उनमें हमारी श्रद्धा भी होती है पर 'श्राद्ध' शब्द तो पारिभाषित होता है। इसमें श्रद्धा का मधुर भाव निहित रहता है। अपने जिन पिता आदि से हमें शरीर प्राप्त हुआ, हमारा लालन-पालन हुआ, यदि उनके नाम से हम एक विशेष पात्र का सत्कार न करें, तो यह हमारी कृतघ्नता होगी। उनके नाम से दान करने पर परलोकगत उनकी आत्मा तृप्त हो जाती है, शान्ति को प्राप्त होती है और उन्नति पाती है। श्रद्धानुष्ठान के यथावत् होने पर प्रेत योनि प्राप्त का प्रेतत्व हट जाया करता है। पिण्ड दान से कष्ट मुक्ति हो जाया करती है। जैसे हजारों कोस का शब्द रेडियों द्वारा तत्क्षण सर्वत्र प्राप्त हो जाता है, वैसे ही मनः संकल्प द्वारा विधि एवं श्रद्धापूर्वक की हुई श्राद्ध आदि क्रियाएं भी चन्द्रलोक स्थित पितरों को प्राप्त होकर उन्हें प्रसन्न कर दिया करती है। चन्द्रमा मन का अधिष्ठाता है। वह हमारे मन में संकल्प से की हुई क्रिया को नित्य पितरों के द्वारा सूक्ष्मता से अपने लोक में खींचकर हमारे पितरों को तृप्त कर दिया करता है। मन द्वारा दिये हुए अन्न व जल को वह सूक्ष्म रूप से आकृष्ट करता है। श्राद्ध पिता, पितामह, प्रपितामह, इन तीन पुरुषों का होता है। श्राद्ध में सदाचारी, तपस्वी, विद्वान्,

स्वाध्यायशील सद्ब्राह्मण को ही भोजन कराने का मनु स्मृति आदि में आदेश है, क्योंकि ऐसे ब्राह्मण की प्रसन्नता से ही प्रेत योनि प्राप्त जीव की सद्गति होती है।

श्राद्ध बिल्कुल रहस्यपूर्ण, सोपपत्तिक एवं विज्ञानपूर्ण है। इसी विज्ञान तत्व पर यहां कुछ विचार किया जाता है।

आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की मृतक की तिथि में सभी मृतक पितरों के श्राद्ध किये जाते हैं। उसमें विज्ञान यह है कि इन दिनों चन्द्रमा अन्य मासों की अपेक्षा पृथ्वी के निकट हो जाता है। इस कारण उसकी आकर्षण शक्ति का प्रभाव पृथ्वी तथा उसमें अधिष्ठित प्राणियों पर विशेष रूप से पड़ता है। तब जितने सूक्ष्म-शरीर युक्त जीव चन्द्रलोक के ऊपरी भाग में स्थित पितृलोक में जाने के लिये बहुत समय से चल रहे होते हैं, व चल पड़े होते हैं, उनका उद्देश्य उनके सम्बन्धियों के द्वारा प्रदत्त पिण्ड अपने अन्तर्गत सोम के अंश से उन जीवों को आप्यायित करके, उनमें विशिष्ट शक्ति उत्पन्न करके, उन्हें शीघ्र और अनायास ही, अर्थात् बिना अपनी सहायता के ही पितृलोक में प्राप्त करा दिया करते हैं। तब वे पितर भी उनकी ऐसी सहायता पाकर उन्हें हृदय से समृद्धि तथा वंश वृद्धि का आशीर्वाद देते हैं।

जो जीव पितृलोक को प्राप्त हो जाते हैं, उनके लिये प्रदान किये हुए पिण्डों व ब्राह्मण भोजन के सूक्ष्मांश उनके पास पहुंचकर उनको आप्यायित करते हैं, जिनसे वे सुख प्राप्त कर पिण्डदाता तथा श्राद्धकर्त्ता पुत्रों आदि को आशीर्वाद देते हैं। प्रतिवर्ष श्राद्ध के मास एवं तिथि में जो श्राद्ध किया जाता है, उसमें कारण यह है कि तिथि होती है चन्द्रमास के तथा चन्द्रगति के अनुसार। उसमें चन्द्रलोक में वे पितर मार्ग व स्थान में स्थित होते हैं, जब वे मरकर उसी तिथि में उस मार्ग या स्थान को प्राप्त हुए थे। तब वे सूक्ष्माग्नि से प्राप्त कराये हुए उस श्राद्ध के सूक्ष्मांश को अनायास प्राप्त कर लेते हैं इसीलिये याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है-

मृतेऽहनि प्रकर्तव्यं प्रतिमासं तु वत्सरम्।
प्रतिसंवत्सरं चैवमाद्यमेकादशेऽहनि।।

अब इसमें किये जाने वाले कर्त्तव्य की विज्ञानपूर्णता देखिये। श्राद्ध के समय पृथ्वी पर कुश रखे जाते हैं और कुशों पर यव-अक्षत आदि के पिण्ड रखे जाते हैं। पिण्डों में जौ, तिल, दूध, मधु और तुलसीपत्र आदि डाले जाते हैं। तब श्राद्धकर्त्ता नित्य पितरों का, यम और परमेश्वर का ध्यान करता है एवं आचार्य वेद मन्त्रों का गम्भीर स्वर से उच्चारण करता है। इस पर यह जानना चाहिये कि चावलों में ठंडी बिजली और जौ में ठंडी बिजली होती है। तिलों में गरम बिजली और दूध में भी गरम बिजली होती है। तुलसी पत्र में दोनों प्रकार की विद्युत होती है। साधारण मनुष्य जब साधारण वचन बोलता है, तो उसके शरीर से न्यून विद्युत उत्पन्न होती है, जबकि कोई वेदवित् कर्मकाण्डी नियत पद परिपाटी वाले पितृगणों से सम्बद्ध वेदमंत्रों को पढ़ता है, तब नाभिचक्र से समुत्थित वायु पुरुष के शरीर में उष्ण विद्युत उत्पन्न करके उसे शरीर से बाहर निकालता है। इधर वेद के शब्दों के द्वारा विद्वान् ब्राह्मण के शरीर से अलौकिक वैदिक क्रियासिद्ध विद्युत भी पिण्डों में प्रवेश करती है।

यदि कोई यह शंका करके कि मृत प्राणी श्राद्ध को कैसे पावेगा जबकि जीवित भी दूसरे के खाये हुए को नहीं पा सकता है? तो इस पर सभी को यह जानना चाहिये कि तर्पण के जल या श्राद्ध के अन्न को जीवित पुरुष स्थूल शरीर-शरीर मूलक अशक्ति के कारण नहीं खींच सकता, परन्तु मृतक तो सूक्ष्म पितृशरीर को प्राप्त करके आकाश में सूक्ष्मता से ठहरे हुए उसको खींच सकता है। इसका उदाहरण रेडियों से ले सकते हैं। जिसके पास यह यन्त्र होता है वह अमेरिका, इंगलैण्ड, जर्मनी आदि अन्य किसी भी देश के शब्दों को खींच सकता है परन्तु जिसके पास यह यंत्र नहीं है वह ऐसा नहीं कर सकता। सूक्ष्म रूप में ग्रहण करने की शक्ति जीवित प्राणियों में, स्थूल शरीर के साथ नहीं होती है। परन्तु मृत प्राणियों में सूक्ष्म शरीर के रूप में यह शक्ति रहती है और वे सूक्ष्म रूप में सभी कुछ प्राप्त करते हैं।

आधुनिक विज्ञान भी आधार एवं माध्यम को पूर्णतया मानता है। टेलीपैथी में यह विज्ञान नहीं तो और क्या है? इस शास्त्रीय विज्ञान के प्रत्यक्ष चमत्कार का अवसर हमें उस समय देखने को मिला, जब कई वर्ष पहले विन्ध्याचल में एक सिद्ध महात्मा पधारे थे। उनमें यह चमत्कार या देवीसिद्ध शक्ति थी कि वे सांप के काटे हुए व्यक्ति को ठीक कर देते थे। चाहे वह कितनी ही दूर क्यों न हो? जो व्यक्ति उनके पास इस आशय की खबर लाता, मन्त्र पढ़कर वे उसके कान पर जोर से थप्पड़ मारते, उधर वह व्यक्ति ठीक हो जाता। समाचार देने वाले व्यक्ति को ही वे माध्यम बनाकर उसे ठीक कर देते। यदि ऐसा सर्पदंशित व्यक्ति उनके पास किसी कारण न लाया जा सकता तो महात्मा जी का कहना था कि माध्यम के आधार पर एवं वायु तरंग के आधार पर उसका सूक्ष्म सम्पर्क बना रहता है। समस्त वायु मण्डल में अर्थावा (इथर) तत्व है ही। साधन सिद्ध योगी महात्मा इसी वायुमण्डल में अपना सम्पर्क बराबर बनाये रखते हैं।

यह श्राद्धीय शक्ति ऋषियों ने हजारों वर्ष साधे हुए तपस्या, योग आदि के बल के द्वारा प्राप्त की है। इसका कोई भी शास्त्रज्ञ विद्वान् खण्डन नहीं कर सकता। जो पितर पितृलोक में न होने से वैसी शक्ति नहीं रखते कि वे सूक्ष्मरूप बनकर श्राद्धान्न भोजन करते हुए ब्राह्मणों के शरीर में प्रवेश कर सकें, किन्तु वे किसी मनुष्यादि के स्थूल शरीर की योनि को प्राप्त कर चुके हों, तब हमारे द्वारा दिये हुए श्राद्ध के अन्न को वसु, रुद्र, आदित्य ही आकृष्ट करके उन स्थूल योनि वाले पितरों को सौंप दिया करते हैं। इस प्रकार मृतक श्राद्ध रहस्यपूर्ण, विज्ञानपूर्ण सिद्ध है।

♦♦♦

पुत्रोत्पत्तिदाता एक सौ सित्तरिया यंत्र

इस यंत्र के बारे में कहा जाता है कि यदि किसी दम्पत्ति को संतान न हो रही हो या पुत्र प्राप्ति की इच्छा पूर्ण न हो तो एक सौ सित्तरिया यंत्र निश्चित ही रामबाण होता है। इस यंत्र की महिमा के बारे में यह भी उल्लेख मिलता है, कि इसके प्रभाव से मात्र पुत्र ही उत्पन्न नहीं होता, अपितु वह बालक पूर्ण तेजस्विता से युक्त, सदाचारी भी होता है। बालक के पुण्य से माता-पिता की भी यशोवृद्धि होती है एवं घर में सुख, संपत्ति, वैभव का विकास होता है।

प्रयोग विधि-इस यंत्र साधना को पति अथवा पत्नी दोनों में से कोई भी सम्पन्न कर सकता है। चाहे तो दोनों भी साधना में बैठ सकते हैं। इसके लिए किसी थाली में हल्दी का लेप लगाकर उसे अंदर से पूरा पीला कर लें। उस पर कुंकुम से निम्न यंत्र का अंकन करें। थाली के मध्य भाग में एक पुष्प का आसन देकर उस पर ''एक सौ सित्तरिया यंत्र'' पेंडल, मुद्रिका को स्थापित करके किसी भी माला से निम्न मंत्र की 11 माला जप करें। मंत्र इस प्रकार है-

।। ॐ ह्रीं सुपुत्रं देहि देहि ॐ शमभवाय नमः।।

और धारण कर लें। यह पेंडल/मुद्रिका आप अपना नाम, पिता/पति का नाम, गौत्र लिखकर प्राण-प्रतिष्ठित करवाकर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

न्यौछावर- पैंडल 1500रू., मुद्रिका 2100रू.

जीवन, कार्य - प्रसिद्धि एवं भाग्य वृद्धि के लिये धारण करें तीन रत्न जड़ित

श्री भाग्यवृद्धि लॉकेट

अब और अधिक प्रभावशाली यंत्र शक्ति के साथ शिक्षा एवं उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के लिये विशेष रूप से उपयोगी...!!

हर कुण्डली में त्रिकोण सबसे बलशाली माना गया है, वह स्थान है लग्न, पंचम भाव एवं नवम भाव। लग्न अर्थात जीवन, पचंम भाव अर्थात बल-बुद्धि, विघा, संतान एवं प्रसिद्धि, नवम भाव अर्थात भाग्य एवं धर्म।

ज्योतिष विद्या के विद्वान प्रायः लग्नेश (लग्न भाव का स्वामी ग्रह) पंचमेश (पंचम भाव का स्वामी ग्रह) भाग्येश (नवम भाव का स्वामी ग्रह) इनके रत्न ही परामर्श में बतलाते है।

यदि किसी व्यक्ति के जीवन में यह तीनों स्थान बलवान हो तो वह व्यक्ति भाग्यशाली, प्रसिद्ध एवं धनवान होता है। अतः हम प्रस्तुत करते है आपके लग्नेश, पंचमेश एवं भाग्येश से संबंधित ग्रहों के रत्नों का समावेश एक ही लॉकेट के रुप में।

क्योकि रत्न अमृत भी है और जहर भी

अर्थात् जो प्रकृति अमृत बनाती है वह विष भी बनाती है। यह आवश्यक नहीं कि कोई भी रत्न आपको लाभप्रद ही हो। सम्भव है किसी रत्न से आपको ऐसी हानि हो, जिसकी आपको कल्पना भी न हो।

इसलिये आप नौसिखिये ज्योतिषियों के चक्कर में ना पड़कर मात्र अपना लग्न जानकर यह लॉकेट धारण कर सकते है। लग्न जानना बहुत आसान है। आपकी जन्म कुण्डली के प्रथम भाव में जो अंक स्थित है वही आपका लग्न है। यदि आपको अपने लग्न की जानकारी प्राप्त करने में कोई असुविधा हो तो अपनी जन्म दिनांक, जन्म समय, जन्म स्थान लिख भेजे या अपनी जन्म कुण्डली की फोटो प्रति भेज दें।

हम आपकी जन्म कुण्डली के अनुसार ही आपके लिये उचित लॉकेट निर्मित कर भिजवाने का प्रबन्ध करेंगे।

क्योकि रत्न बहुत ही कीमती होने के कारण मंहगे होते है और साधारणः व्यक्ति की पहुंच के बाहर होते है इसलिये हम आप ही के लिये इन्हीं रत्नों के उपरत्नों का प्रयोग करते हुए यह 'श्री भाग्यवृद्धि लॉकेट' मात्र 1500 रु में उपलब्ध करवा रहें है और वह भी पूर्णतया वैदिक रीति से प्राण-प्रतिष्ठित इन्हीं ग्रहों के मंत्रो से।

क्योकि मनुष्य ग्रहों के अधीन है अतः इन ग्रहों की अनुकूलता प्राप्त करते हुए जगाइये अपने भाग्य को व पाईये सामाजिक प्रसिद्धि, आर्थिक उन्नति एवं उत्तम स्वास्थ्य।

प्रत्येक व्यक्ति के लग्नेश+भाग्येश+पंचमेश के उपरत्नों का बीसा यंत्र सहित लॉकेट

आपके आदेश पर असली रत्न जड़ित स्वर्ण लॉकेट भी उपलब्ध करवाया जा सकता है। सम्पर्क करें

सम्पर्क करें

मूल्य 4500/- मात्र

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.) 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625

visit us: www.fameandfortune.org E-mail: sale_trinetra@yahoo.in